आशीष शरण गुरु की पाने, 'विद्या' के 'सुव्रत' करें विनय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥7॥

(दोहा)

श्रेष्ठ समाधि कर गए, विद्यागुरु आचार्य।
जाते-जाते दे गए, समयसागराचार्य॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समयगुरु स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, समयसागराचार्य॥

(पुष्पांजलिं...)

❑❑❑

आचार्य श्री समयसागरजी की आरती

समयसागरजी महाराज, आज तेरी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ, तेरी मूरत निहारूँ। समयसागरजी महाराज....॥

१. मल्लप्पा के राज दुलारे, श्रीमंती की आँखों के तारे।
शरद पूनम के चाँद, आज तेरी....॥

२. ग्राम सदलगा जन्म सँवारे, द्रोणगिरि में मुनि पद धारे।
कुण्डलगिरि में आचार्य, आज तेरी...॥

३. अल्प आयु में घर को छोड़े, विद्या गुरु के पीछे दौड़े।
बालयति सिरताज, आज तेरी...॥

४. शांति ज्ञान विद्या के संगम, दिखें समयसागर में हरदम।
मंद मधुर मुसकान, आज तेरी...॥

५. चलते फिरते देव हमारे, शास्त्रों के भण्डार निराले।
गुरुओं के गुरुराज, आज तेरी...॥

६. अपने चेतन करने उजले, पूज्य समयसागर को भज ले।
'सुव्रत' जला के दीप, आज तेरी...॥

❑❑❑

प्रस्तोता-बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज पूजन

रचयिता- मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

स्थापना (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं)।

ले जन्म हुए लघुनंदन पर, विद्यागुरु का करुणा जल पा।
बन गए समयसागर मुनिवर, रत्नत्रय पा निज चेतन ध्या॥
हम प्रासुक जल अर्पित करके, दुख जन्म मरण का करें विलय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका मन चंदन सा शीतल, वाणी अमृत सी झरती है।
मुख पर मुस्कान सदा रहती, जो आकुलता दुख हरती है॥
हम यह चंदन अर्पित करके, संसार ताप का करें विलय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब शांतिनाथ का नाम मिला, तो शांति नाम सार्थक करने।
विद्या के पीछे दौड़ पड़े, क्षत विक्षत को अक्षय करने॥
हम ये अक्षत अर्पित करके, बस चाहें चरण शरण अक्षय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों सी काया पाकर भी, ना विषय भोग संसार चुना।
बस विद्यागुरु के अनुचर हो, उपसर्ग परीषह मार्ग चुना॥
हम पुष्पों को अर्पित करके, इस कामबाण का जीतें भय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

जब मुनि बनने का भाव हुआ, तो शांतिनाथ का मन हर्षा।
तब खानपान तो रुचा न पर, अध्यात्म रसों का रस बरसा॥
नैवेद्य तुम्हें अर्पित करके, हम क्षुधारोग से बनें अभय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या गुरु ने जाते-जाते, आचार्य समयसागर को दे।
सान्निध्य दिया छाया कर दी, पथ दिखा रहे आगे होके॥
यह दीप तुम्हें अर्पित करके, हम तुम सम त्यागें मोहालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्मयज्ञ विद्यागुरु ने, प्रारंभ किया आगे चलके।
परिवार उसी पर बढ़ा चला, चैतन्य महल जिससे झलके॥
यह धूप तुम्हें अर्पित करके, बस चाहें कर्मकाष्ठ का क्षय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यागुरु के पीछे-पीछे, निष्पृह होकर परिवार चला।
पर दुनियाँ से कुछ ना चाहा, जो आया उसका किया भला॥
ये प्रासुक फल अर्पित करके, हम चलें साथ में मोक्ष निलय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सा मन चंदन सा चेतन, अक्षत सा पुष्प समर्पण है।
नैवेद्य वचन दीपक सा तन, अध्यात्म धूप फल अर्पण है॥
विद्या के बाग बगीचे से, ले सुव्रत पूजें अर्घ्य समय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

समय प्रथम गुणगान का, अतः त्याग हर कार्य।
विद्या के सुव्रत भजें, समयसागराचार्य॥

(शंभु)

जो समयसार का सार बताने, समय-समय पर समय बनें।
जो साथी जैसे साथ निभाने, समय-समय पर समय बनें।
जो नाविक जैसे पार लगाने, समय-समय पर समय बनें।
जो मात-पिता सा प्यार लुटाने, समय-समय पर समय बनें॥1॥
वो हैं आचार्य समयसागर, जो विद्यागुरु के लघुनंदन।
जिनकी चर्या चर्चा चेतन, है कुंदकुंद जैसी कुंदन॥
जिनके दर्शन पूजन करके, श्री शांति ज्ञान विद्या झलके।
इसलिए नमोस्तु कर हम सब, उनकी गाथा गाएँ मिलके॥2॥
सद्लगा ग्राम कर्नाटक के, श्रीमंती-मल्लप्पा जी के।
सुत प्रथम बने विद्यासागर, फिर समय-योगसागर नीके॥
फिर बनी समयमति श्रीमंती, मल्लप्पा मुनि मल्लिसागर।
अन्तिम मुनिवर उत्कृष्ट बने, परिवार चला मुक्ति पथ पर॥3॥
आचार्य बने विद्यागुरुवर, फिर प्रथम शिष्य विद्यागुरु के।
पहले निर्यापक श्रमण बने, आचार्य समयसागर सब के॥
आचार्य शान्तिसागर जैसे, गुरु परम्परा संवाहक जो।
आचार्य वीरसागर जैसे, हैं धर्म मर्म के दायक जो॥4॥
आचार्य श्री शिवसागर से, शुद्धात्म तत्त्व के ज्ञायक जो।
आचार्य ज्ञानसागर जैसे, चारित्र ज्ञान के नायक जो॥
आचार्य श्री विद्यागुरु से, जो पंच तीर्थ जैसे लगते।
आचार्य स्वरूपी प्रभु जैसे, आचार्य समयसागर दिखते॥5॥
जो शरद पूर्णिमा को जन्मे, द्रोणागिरि में मुनिपद पाए।
आचार्य बने कुण्डलपुर में, सुदि चैत्र अष्टमी हर्षाए॥
गंभीर मौन साधक त्यागी, सिद्धान्त तत्त्व के ज्ञाता जो।
जो करें धूप में छाँव हमें, हम सबके भाग्य विधाता जो॥6॥
आचार्य समयसागर जी के, दर्शन कर यह अहसास हुआ।
आचार्य श्री विद्यागुरु का, फिर से जीवित संन्यास हुआ॥